CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीरामचरण पादुका

अनादि सृष्टि क्रम में अनेक राजाओं तथा उनकी शासन व्यवस्थाओं का वर्णन प्राप्त होते हैं। परन्तु रामराज्य का वर्णन उनके मध्य में अनुपम है। जिस राज्य का प्रत्येक प्राणी समस्त पीड़ाओं से रहित था आध्यात्मिक- आधिभौतिक-आधिदैविक ये तीनों ही ताप किसी का स्पर्श तक भी नहीं करते थे। परस्पर शाश्वत् विरोधियों ने अपने वैरभाव को सहजता से भूला दिया था। सभी मनुष्यों में परस्पर प्रेम की धारा प्रवाहित हो रही थी। अल्पमृत्यु, दरिद्रता, दीनता, मूर्खता, दम्भ, कपट आदि सर्वथा लुप्त हो गए थे। अनावृष्टि एवं अतिवृष्टि का प्रकोप नहीं था। रामराज्य का प्रत्येक प्राणी जीवन मुक्ति के आनंद सागर में गोता लगा रहा था। भगवान् शंकर तो अपने मुक्ति-क्षेत्र काशी में मरने के बाद मुक्ति प्रदान करते हैं लेकिन उस राज्य में जीवित अवस्था में भी मुक्त थे। शास्त्रों में वर्णित परमानन्द प्राप्ति के साधनों के अनुष्ठान के विना ही सभी परमानन्द का अनुभव कर रहे थे। कर्म-ज्ञान-ध्यान समाधि अपनी अनुपादेयता पर परम खिन्न थे। समस्त बाधाओं से रहित तथा परमानन्द को प्राप्त रामराज्य के मनुष्य वेद प्रतिपादित स्वधर्म में संलग्न थे।

रावणादि महाराक्षसों का विनाश कर चौदह वर्ष के बाद श्री राम सीता जी लक्ष्मण जी एवं अपने मित्रों के साथ अयोध्या लौटे। वैदिक रीति से उन्हें सिंहासनारूढ़ किया गया। इसके बाद के काम व शासन व्यवस्था को ही रामराज्य के रूप में समझा जाता है। जो प्रत्येक दृष्टि से संसार के इतिहास में वेजोड़ तथा अनुकरणीय है। जिन मूलभूत तत्वों के आधार पर रामराज्य का अनुपम भव्य एवं दिव्य महल खड़ा हुआ था उसका अन्वेषण करने पर पता चलता है कि वह श्री राम चरण पादुका राज्य था। भरत जी के अनेक प्रयासों के बाद भी जब श्रीराम वनवास को छोड़कर अवध आने के लिए तैयार नहीं हुए तब गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से उन्होंने अपने प्रतिनिधियों के रूप में अपने चरण पादुका को दिया। जिसे पूर्ण सम्मान के साथ अवध लाकर तथा गुरु वशिष्ठादि समस्त ब्राह्मणों, माताओं एवं सुमन्त्रादि राजकर्मियों की सहमति के आधार पर नन्दिग्राम में सिंहासन के ऊपर श्री रामचरण पादुका को विधिवत् प्रतिष्ठित किया गया तथा भरत जी वहीं पूर्ण तपस्वी जीवन बिताते हुए- श्री राम के दिव्यगुणों का कीर्तन स्मरण एवं चरण पादुका की सेवा करते हुए- चौदह वर्ष बिताये। श्री राम के वनवास का काल भी अवध के लिए "श्री राम चरण पादुका" काल है। जो अपने आप में अद्वितीय है। कागभुशुण्डि रामायण में इसे "पादुका राज्य" के रूप में वर्णन किया गया है। पादुका राज्य में रामराज्य के सभी लोकोत्तर मूल्यों का बीजारोपण ही नहीं अपितु वे क्रमशः अंकुरित-पल्लवित-पुष्पित भाव को प्राप्त होते हुए फलित हो चुके थे। राम राज्य के सभी अनुपम उपलब्धियों की सुस्पष्ट एवं मनोहारी झांकी पादुकाराज्य दक्षिण खण्ड में समुपस्थित हो चुकी थी जिसका वर्णन कागभुशुण्डि रामायण के दक्षिण खण्ड के सैंतालीसवें (४७) अध्याय में किया गया है उसको पढ़ने से किसी भी पाठक का भ्रमित हो जाना स्वभाविक है कि यह रामराज्य का ही वर्णन है। राम जी के वन से लौटने के बाद भी भरत जी ने अवध की विकसित ऐश्वर्य को श्री राघव के चरणों में समर्पित किया तो तब सभी लोग परम आश्चर्यचकित हो गये। इन तथ्यों का महर्षि वाल्मीकि ने अत्यन्त सुन्दर रीति से वर्णन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया है। बाह्य ऐश्वर्य ही नहीं अपितु सभी प्राणियों का आन्तरिक ऐश्वर्य भी निरतिशयत्व को प्राप्त कर चुका था। उससे सुस्पष्ट होता है कि रामराज्य की समस्त अनुपम तथा परममंगलमयी उपलब्धियों के सम्पादन में पादुका राज्य की एक मात्र भूमिका थी।

राष्ट्र समाज-परिवार व व्यक्ति के जीवन में यदि रामराज्य की स्थापना करनी हो तो उसके परमसाधनभूत पादुका राज्य की स्थापना सबसे पहले करनी चाहिए। पादुका राज्य की जो प्राणभूत धारणाएँ हैं उनपर ध्यान दिलाना आवश्यक है। पादुका उस राजा का प्रतिनिधि-भूत थी जिसे संसार का कोई भी ऐश्वर्य लुभाकर धर्म से विरत नहीं कर सकता था। जिसे अपनी प्रजा प्राणों के समान प्रिय थी। जिसकी प्रत्येक क्रिया सव्य में प्रतिष्ठित थी। जो परम सुकुमारता के साथ परमतपस्वी का जीवन जी सकता था। जो अनुपम शीलवान् था। वैदिक सनातन धर्म का जो विग्रहवान् स्वरूप था। शास्त्रों में लिखा है कि देव बनकर देवता की पूजा करनी चाहिए। श्री भरत जी ने अपनी उपास्य चरणपादुका के स्वरूप के अनुसार ही पहले अपना जीन बनाया। इसके बाद पादुकाओं का विधिवत् पूजन करते हुए उनकी आज्ञा के अनुसार राज्य का संचालन किया। पादुका पूजक भरत की दशा का वर्णन पढ़कर हृदय गद्गद हो जाता है। रामचरित्र के सभी प्रकाशकों ने इस मनोहारी रीति से चर्चित किया है :— गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में इस दशा का परिचय सूत्र रूप में प्राप्त करें —

जटा जूट सिर पर धारी। महि खनि कुस साथरी संचारी॥

असन वसन वासन व्रत नेम। करत कठिन रिषि धरम सप्रेमा॥

फलक गात हिय सिय रघुबीरु। जीह नाम जप लोचन नीरु॥

लखन राम सिय कानन बसहीं। भरत भवन बसि तपतन करहीं॥

द्वौ दिशि समुझि कहत सब लोगू। सब विधि भरत सराहन जोगू॥

सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दशा मुनिराज लजाहीं॥

इस अवस्था को प्राप्तकर भरत जी पादुका सम्राट् की सेवा करते हुए राजराज्य की स्थापना करते हैं। जबतक हम अपने जीवन को इस अवस्था से नहीं जोड़ेंगे तथा समस्त ऐश्वर्य के स्वामी श्री राम जी के प्रतिनिधि-भूत उनकी पादुका का पूर्ण भाव से पूजन नहीं करेंगे तब तक संसार-राष्ट्र-समाज-परिवार व व्यक्ति किसी भी जीवन में रामराज्य का स्वरूप साकार नहीं सकता है। राम राज्य प्राप्ति के समस्त तत्वों को यदि एक सूत्र में सग्रथितपुर कहना हो तो यही कहा जा सकता श्री रामचरणों में परम अनुराग को प्राप्त कर दास भाव से शास्त्ररीति से व्यावहारिक क्रमों का सम्पादन ही वह एक सूत्र है। अभी तो लोग नास्तिक वनकर ही राम राज्य की स्थापना में व्यग्र है। भरत जी जिस रीति से कागभुशुण्डि रामायण में प्राप्त है। साधकों के कल्याण को ध्यान में रखकर पूजनविधि अंगन्यास-मंत्र -कवच एवं स्तोत्र कागभुशुण्डि रामायण से यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं। इस विधि को अनुसरण करते हुए ही श्री रामचरण पादुका पूजन श्रीमठपीठासीन जगद्गुरु रामानन्दाचार्य भी करते हैं तथा उत्तरोत्तर पीठासीन होने वाले आचार्य भी करेंगे।

श्री रामचरणपादुका मंत्र जप से पूर्व साधक को निम्नलिखित विनियोग, अंगन्यास, करन्यास और ध्यान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना चाहिए। उसकी विधि निम्न प्रकार है।

विनियोग– हाथ में चन्दन, पुण्य, तुलसीदल मिश्रित जल लेकर अस्य श्री पादुका मंत्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री पादुकाख्य परमात्मा देवता, हंसः बीजम् सोऽहं शक्तिः, ऐं कीलकम्, चतुर्विध पुरुषार्थसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

अंगन्यास :– हृदयादि अंगों का स्पर्श करते हुए इन मंत्रों को पढ़ेः– ह्सौ हृदयादि नमः। ह्सीं शिरसे स्वाहा। ह्सूं शिखायै वषट्। ह्सौ कवचाय हुम्। ह्सौ नेत्र त्रयाय वौसट्। ह्सः अस्त्राय फट्। इति।

करन्यासः– ह्सो अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्सीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्सूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्सैं अनाभिकाभ्यां नमः। ह्सौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्सं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यानम्:– पुष्पसहित अंजलि बांधकर निम्नमंत्र पढ़ते हुए ध्यान करेः–

मुक्ताविदुमहेमहीरघटित श्री पीठराजोत्तमे,

दीव्यन्त्यै विलसन्निसर्गपरमानन्दप्रकाशादभुते।

विस्फूर्जत्तरुणार्ककोटिकिरणव्याकीर्णशुद्धाम्बरे

सच्चिदूपधने घनाथतिभिरस्तोभैकनाशोद्भटो

भक्तानां शिरसि प्रकाशपटली फुल्लत्सहस्रच्छदे

पंदमेऽखण्डलचन्द्रमण्डलगत श्री हंसपीठोत्तमे।

तिष्ठन्त्यौ निजपूर्णधामनि सदा कल्याण दिव्यास्पदे

मायामोहमदान्धकारशमने सेव्ये विभो पादुके ॥२॥

इसके पश्चात् "रां रामचन्द्र सहजानन्दिनी रामचन्द्र सहजानन्दिनी श्री पादुकां पूजयामि नमः" इस मंत्र का कम से कम एक सौ आठ बार (अष्टोत्तरशत) जप करे तथा निम्नलिखित विधि से चरणपादुका का षोडशोपचार पूजन करे।

श्रीमते रामचन्द्रपरब्रह्मणे नमः

संक्षिप्त श्री रामचन्द्र चरणपादुका पूजनविधिः

आसन, दिग्बन्धन, आचमन, प्राणायाम, स्वस्तिवाचन एवं संकल्प के पश्चात् दोनों हाथों को सम्पुटित कर यह ध्यान मंत्र पढ़ें– न जाग्रन्न सुप्तिर्न वा सा सुषुप्तिस्तुरीयं पदं तत्र ये संस्थिते वै।

चिदानन्द सन्मात्र नित्यस्वरूपे भजेऽहं सदा स्वामिनः पादुके ते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्री रामचरणपादुकाभ्यां नमः ध्यायामि।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात। स भूमि ग्वं सर्वतस्पृत्वा त्यतिस्ष्ठद्दशांगुलम्। ॐ श्री रामचन्द्र चरणपादुकाभ्यान्नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। इति मन्त्रेण आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयेत्।

प्रतिष्ठा— ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामों इ प्रतिष्ठ।

आसनम्— पुरुषऽएवेद ग्वं सर्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्ये शानो। यदन्नेनातिरोहति॥

ॐ श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यां नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पाद्यम् — एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायांश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

श्री रामचन्द्रपादुकाभ्यां नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।

ततो व्विष्वङ्ग व्यक्रामत्साशनानशनैऽभिः॥

ॐ श्री रामचन्द्रपादुकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्— ॐ शन्नो देविरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभि स्रवन्तु नः। ततो विराडजायत व्विराडोऽधिपुरुषः।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमयो पुरः॥

श्री रामचन्द्रपादुकाभ्यां नमः आचमनीयं समर्पयामि॥

जलस्नानम्— ॐ आपो हिष्ठामयो भुवस्तानऊर्ज्जे दधातन।

महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः॥

उशतीरिव मातरः तस्या अरंमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।

ॐ तस्याथज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्।

पशुँस्ताँश्चक्रे व्वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये॥

जल स्नानं समर्पयामि श्री रामचन्द्रपादुकाभ्यां नमः।

दुग्ध स्नानम्— ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पयोघाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

दुग्धस्नानं समर्पयामि श्री रामचन्द्रपादुकाभ्यां नमः ॥

दधिस्नानम्– ॐ दधिक्राण्णोऽ अकारिषजिष्णोरश्वरस्य वाजिनः ।

सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयू षितारिषत् ॥

ॐ श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः दधिस्नानम् समर्पयामि ।

घृतस्नानम्– ॐ घृतम्मिमिश्रे घृतमस्य योनिर्ग्धृतेश्रितोघृतम्बरस्य धाम ।

अनष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षिहव्यम् ॥

घृतस्नानं समर्पयामि श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः ।

मधुस्नानम्– ॐमधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता ।

मधुमान्नो वनस्पतिर्म्मधुमां २ अस्तु सूर्यः माध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः ।

ॐ श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः मधुस्नानं समर्पयामि ॥

शर्करास्नान्– ॐ अपां रस मुद्वयसे सूर्यसन्त समाहितम् ।

अपां रसस्य यो रसस्तं व्वो गृहणाम्युत्तममुपयाग गृहीतोसीन्द्राय ।

त्वा जुष्टं गृहणम्येष ते योगिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यां नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि ।

पंचामृतस्नानम्– ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतराः ।

सरस्वती तु पंचधा सो देशो भवत्सरित् ॥

ॐ पंचामृतस्नानं समर्पयामि श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः ॥

शुद्धोदकस्नानम्– ॐ शुद्धबालः सर्वशुद्धबालो मणिबालस्त आश्विनाः ।

श्येतः श्वेताक्षर्यो रूणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नमो रूपः पार्ज्जन्यः ।

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानीयम् समर्पयामि ।

वस्त्रम्– ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋच्चः सामानि जज्ञिरे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्तस्ज्जाद्यजुस्तस्मादजायत ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः वस्त्रम् समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्— ॐ तस्मादश्वाऽअजायंत ये के चोभयादंतः।

गावो ह जज्ञिरे तस्माज्जाताऽ अजावयः ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यां नमः वस्त्रम् समर्पयामि ॥

चन्दनम्— ॐ त्वांगन्धर्वा अखस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः

त्वामोषध सोमो राजा विदद्धान्नयक्षमादमुच्यत् ॥

तं यज्ञं बर्हिसि प्रौक्षन्नपुरुषन्जातमग्रतः

तेन देवाऽअयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥

श्री रामचन्द्रपादुकाभ्यान्नमः चन्दनम् समर्पयामि ॥

श्री तुलसी— ॐ विष्णोः कर्म्माणि पश्यत यतो व्रतानि पश्यसे। इन्द्रस्य युज्यस्य सखा।

श्री रामचन्द्रपादुकाभ्यान्नमः श्री तुलसीदलं समर्पयामि।

पुष्पम्— ॐ यत्पुरुषभ्व्वयदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत्किं बाहु किमुरु पादाऽ उच्च्येते ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः पुष्पं समर्पयामि ॥

पुष्पमाला— ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वाऽइव सजित्वरी र्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

ॐ श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

धूपम्— ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्वन्तं धूर्पतं य्योस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।

देवानामसि वह्नितम सस्नितमम्पप्रितमन्जुष्टमन्देव हुतभम् ॥

श्री रामचन्द्र चरण पादुकाभ्यान्नमः धूपम् आघ्रापयामि ॥

दीपम्— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽजायत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः दीपम् दर्शयामि ।

ततः हस्तप्रक्षालनं जलेन ।

नैवेद्यं— नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ग्वंशीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः २ श्रोत्रात्तथा लोकां २ अकल्पयन् ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः नैवेद्यं निवेदयामि ॥

फलम् — ॐ याः फलिनीठर्याऽ अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।

बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुन्चत्व हसः ।

ॐ श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः फलम् समर्पयामि ।

ताम्बूलम्— ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।

पूगीफलं च— वसन्तोऽस्या सीदाज्यंङ् ग्रीष्मऽइध्म शरद्धविः ।

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः ताम्बूलम् समर्पयामि ।

दक्षिणा— ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्

स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमांकस्मै देवाय हविषा व्विधेम ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि ॥

कर्पूरार्तिक्यं— ॐ इदं हविः प्रजननम्मेऽ अस्तु दंशवीण सर्वंगण ॐ स्वस्तये ।

आत्मसनि प्रजासनि पशुसनिलोकसन्नयमयसनि ।

अग्निः प्रजाम्ब हुलम्मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽअस्मासु धन्त ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः कर्पूरार्तिक्यं समर्पयामि ॥

आर्तिं— ॐ आरात्रिं पार्थिवं रजः पितुरप्रायि धामभिः ।

दिवः सदा सि बृहतीव्वितिष्ठसऽ आत्वेषं वर्त्तते तमः ॥

आरार्तिक्यं समर्पयामि श्री रामचन्द्रपादुकाभ्यान्नमः ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुष्पांजलि– ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्

तेह नाकं महिमानः सचन्तयत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।

पुष्पांजलिः समर्पयामि श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यान्नमः ।

प्रदक्षिणा– ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।

देवा यद्यज्ञन्तन्वाना ऽ अबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥

श्री रामचन्द्रचरणपादुकाभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

तदनन्तरं अद्भ्यः इत्यादि मंत्रैः श्री रामचन्द्रचरणपादुकां स्तूयात् ।

तदनन्तरं हस्ते पुष्पादिकं गृहीत्वा पुनः प्रार्थयेत् ।

ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं परात्पर यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजा विधिं न जानामि त्वां गतिः परमेश्वर ।

ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॐ अच्युताय नमः ३ ॥

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीरामचरणपादुका कवच ॥

ब्रह्मोवाच

सनत्कुमार उवाच

अथ वक्ष्यामि ते वीर, पादुका कवचं शुभम्। पठनीयं सदा यद्धि मन्त्रसिद्धिमभीप्स्यता ॥१॥

ब्रह्मणा धारितं पूर्वं नारायणमुखाम्बुजात्। तदभूयो ब्रह्मणा प्रोक्तं करुणा-कलितेन मे ॥२॥

तदहं ते प्रवक्ष्यामि भक्ताय सुमहात्मने। रहस्यं सर्ववेदानां सारभूतं समुदधृतम् ॥३॥

पादुकाकवचस्यास्य नारायण ऋषिः स्वयम्। छन्दो विराडिति प्रोक्तं पादुका परदेवता ॥४॥

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोग उदाहृतः। पठनीयं त्रिसन्ध्यं तत्प्रयत्नेन समाहितः ॥ ५ ॥

प्रणवो मे शिरः पातु वाग्भवं पातु मेऽलिकम्। माया बीजं मुखं पातु चक्षुषी कमलावतु ॥ ६ ॥

हकारो नासिकां पातु सकारः श्रवसी च मे। षकारो गण्डयुग्मं मे शेषं पात्वधरं मम ॥ ७ ॥

उत्तरोष्ठं सदा पातु कूटात्मा मन्त्रविग्रहः। द्वितीयकूटमन्त्रो मे ग्रीवां रक्षतु सर्वदा ॥८ ॥

तृतीयः ककुदं पातु चतुर्थोऽसयुगं सदा। राममन्त्रः उरः पातु अज्ञानेन्धनदीपनः ॥ ९ ॥

रामचन्द्रः स्वयं पातु दक्षिणं मे भुजं सदा। मम वामभुजं पातु सहजानन्दिनी स्वयम् ॥ १० ॥

युग्मं मे हृदयं पातु श्रीरामसहजात्मकम्। श्रीरामपादुका पातु बुद्धिं मे सत्वसम्भवाम् ॥ ११ ॥

तत्पूजनक्रिया पातु सदा कर्मेन्द्रियाणि मे। नमस्या च सदा पातु ज्ञानेन्द्रियकदम्बकम् ॥ १२ ॥

उदरं मे सदा पातु मन्त्रतेजो महादभुतम्। नाभिं मे सर्वदा पातु मन्त्रचैतन्यमुत्तमम् ॥ १३ ॥

मन्त्रप्रतिष्ठा सततं पातु मे चरणद्वयम्। मन्त्रशक्तिर्गुदं पातु मन्त्रबीजमुपस्थकम् ॥ १४ ॥

मन्त्राक्षराणि मे पातु अंगप्रत्यंगविग्रहम्। मन्त्रस्वराः सदा पान्तु शक्तिं मे सर्वकर्मसु ॥ १५ ॥

मन्त्रव्यंजनसंदोहः सर्वदाऽवतु मे मनः। विन्दुः पातु सदा लक्ष्मीं विसर्गो विपदं द्यतु ॥ १६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्त्रादिः शिरसारभ्य ग्रीवां रक्षतु सर्वदा । कण्ठादारभ्य नाभ्यन्तं मन्त्रमध्यं ममावतु ॥ १७ ॥

मन्त्रावसानमनिशमधोंगममेऽभिरक्षतु । अशेषमन्त्ररूपं मे श्रीरामः सकलं वपुः ॥ १८ ॥

महदादिश्च भगवान् परतत्वं ममावतु । स्थूलदेहं सदा पातु विराड् ब्रह्माण्डरूपधृक् ॥ १९ ॥

भगवान् सर्वभूतस्थः सूक्ष्मदेहं ममाऽवतु । परं शरीरं मे पातु परमात्मा सनातनः ॥ २० ॥

सख्याः पुलिने रम्ये रत्नधाम्नि सुसंस्थितम् । अक्षराख्यं परं ब्रह्म सर्ववेदोपसेवितम् ॥ २१ ॥

श्रीरामपादुकारूपं सर्वशक्तिसमन्वितम् । जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्यगुणावस्था विवर्जितम् ॥ २२ ॥

तुरीयं तुर्यपदगं यदेकं सर्वतः समम् । तन्मां पातु विशेषेण सर्वावस्थासु सर्वदा ॥ २३ ॥

योगिनां च शिरोदेशे सहस्रदलपंकजे । चिच्चन्द्रमण्डलान्तःस्थ- हंसपीठोपरिस्थितम् ॥ २४ ॥

पराशक्तिसुसम्पर्क- सामरस्य रसोद्भवैः । अमृतश्चित्सुखवहैरभिसिक्तं निरन्तरम् ॥२५ ॥

समस्तमोक्षपदवी साम्राज्यपदनायकम् । अज्ञानतिमिरस्तोमहरणोद्यशक्तिभृत् ॥२६ ॥

सर्वज्ञानक्रियाशक्तिबीजभूतं परात्परम् । सर्वमन्त्रसमाराध्यं सर्वागमनमस्कृतम् ॥ २७ ॥

सर्वदैवतसंदोह साम्राज्यसुखभाजनम् । वन्दे श्रीपादुकायुग्मं रामस्य परमात्मनः ॥ २८ ॥

श्रद्धां देहि श्रियं देहि भक्तिं देहि परात्मिकाम् । अनुग्रहं कुरु सदा पादुके परदेवते ॥ २९ ॥

दत्तां बुद्धिं विशुद्धां गिरमतुलरां वेद-वेदांगरूपाम् श्रेष्ठां लोके प्रतिष्ठां मदगजगमनोद्भूतघण्टानिनादम् ।

ऐश्वर्यं विश्ववर्यं सुखमधिकतरं कामलोलैर्मृगाक्षी संदोहैः पूर्यमाणो धनवति सदने त्वत्प्रसादाल्लभन्ते ॥ ३० ॥

एवं संस्तूय सततं भज श्रीपादुकायुग्मम् । भविष्यस्य चिराद्वीर परानुग्रहभाजनम् ॥ ३१ ॥

कवचं च पठाजस्रं पादुकामन्त्रतत्वयुक् । लप्स्यसे परमानन्दं पूर्णं भरत तत्क्षणात् ॥ ३२ ॥

सौभाग्यं विपुलं भोग्यमारोग्यं सर्वसम्पदः । प्राप्नुवन्ति जपादस्य जयं च जगति ध्रुवम् ॥ ३३ ॥

इदं रहस्यं रघुनन्दनस्य श्रीपादुकासत्कवचं पठन्नरः ।

अवाप्य धर्मार्थसुकाममुक्तीर्भोगोदयौ क्रीडति भक्तिसिद्धः ॥ ३४ ॥

इति श्रीमदादिरामायणे ब्रह्मभुशुण्डिसंवादे दक्षिणखण्डे पादुकाराज्ये कवचमन्त्रकीर्तनं नाम षटपंचाशत्तमोध्यायः ।

★ ★ ★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीरामचरणपादुका स्तोत्र

भरत उवाच–

नमो ब्रह्म सर्वादिदेवेन्द्रवन्द्ये परे व्योम्निनित्यं स्वधाम्नि प्रतिष्ठे ।
सदासिन्धुजांसुन्दरिसंविमृग्ये श्रियासंयुते श्रीप्रभोः पादुकेवाम् ॥ १ ॥
सहस्रार्कशीतांशुविद्योतिरूपे महामोहतामिस्रविच्छेदशक्ते ।
दुरन्ते भवाम्भोनिधौ दिव्यनौके प्रभोः पादुके वां सदासन्नतोऽहम् ॥ २ ॥
पदंश्रेयसां दत्तनिःश्रेयसं यद् विपन्काननोच्छित्तिकर्मा कुठारम् ।
महासिद्धिमद्भूरिभाग्योदयाढ्यं विभातीशितुः पादुकायुग्ममेतत् ॥ ३ ॥
सदानन्दपीयूषधाराघनाली जगत्पायसंतापनिर्यापणाय ।
त्रिवेदी शिरःसदम सर्वस्वभूतं प्रभोः पादुकायुग्ममुद्भातु चित्ते ॥ ४ ॥
सदा संपदामेकमुच्चैर्निकेतं महाघोरसंसारपायोधि-सेतुः ।
सुदुर्ज्ञेयतत्वप्रबोधैकहेतुश्चिरं शोभतां पादुकायुग्ममेतत् ॥ ५ ॥
अशेषप्रमाण प्रमेयार्थरूपे शिवब्रह्मकोटीररत्नांशुमिश्रे ।
सदानन्दसंपत्तिसंदोहदाने प्रभोः पादुके प्राप्य भक्त्या भजेऽहम् ॥ ६ ॥
परंचिन्नभश्चारुचिच्चन्द्रकान्त्या सदोदीतयाजातनित्यप्रकाशम् ।
तदातिष्ठतो यो स्थिते स्वे महिम्नि प्रभोर्ब्रह्मरूपे भजे पादुके त्वे ॥ ७ ॥
न यद्भासयत्यर्कबिम्बप्रकाशो न चन्द्रो न बह्निर्नवा विद्युतोऽपि ।
इदं भाति सर्वं यदेवानुभाच्च प्रभोः पादुकायुग्ममस्याश्रितस्तम् ॥ ८ ॥
न जाग्रन्न सुप्तिर्नवासासुषुप्तिस्तुरीयं पदं तत्र ये संस्थिते वै ।
चिदानन्दसन्मात्रनित्यस्वरूपे भजेऽहं सदा स्वामिनः पादुके ते ॥ ९ ॥
जगत्यर्चने ध्यानपूजानतीनां पदेकं पदं सर्वकल्याणधाम ।
सकामैरकामैस्तथासर्वकामैस्तदाराधितं पादुकायुग्ममीडे ॥ १० ॥
अमूर्तं तथा मूर्तिमद्वस्तुकिन्चिदगुणैः संगतं निर्गुणं वा यदेव ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदेकं तथानेकमात्मप्रकाशं परं ब्रह्म तत् पादुकायुग्ममीडे ॥ ११ ॥

अशेषावतारावतारिस्वरूपं समस्तागमाम्नाय मार्गैकशेषम् ।

सुसिद्धान्तिनामन्विताशेषवाक्यं भजे पादुकायुग्ममेकं समस्य ॥ १२ ॥

यतो वर्णिताशेषतत्वप्रभूतिस्तथाशेषतत्वानि यत्राप्ययन्ति ।

परं तत्वमेकं परब्रह्मरूपं भजे पादुकायुग्मसीतापतेस्तत् ॥ १३ ॥

पशुग्रामपुत्रांगनादीनि नित्यं नृणां यत्प्रसादात्फलान्यैहिकानि ।

भवन्ति प्रभूतानि चामुष्मिकानि स्मरेत्को न ते पादुके राघवस्य ॥ १४ ॥

नमः कोटि कल्याणकल्पद्रुमाभ्यां परानन्दसंदोहचिन्तामणिभ्याम् ।

अपि स्वैरमात्मप्रबोधप्रदाभ्यां सीताभर्तुरंघ्रिद्वयि पादुकाभ्याम् ॥ १५ ॥

ब्रह्मोवाच–

इत्यभिष्टूय भरतो रामराजस्य पादुके ।

पुष्पांजलिं ददावुच्चैः पूजान्ते प्रतिवासरम् ॥ १६ ॥

अन्योऽपि मनुजो यस्तु भक्त्या सम्पूज्य पादुके ।

निवेदयति पूजान्ते मन्त्रपुष्पांजलिं सदा ॥ १७ ॥

तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यान्मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा ।

श्रीरामपादुकायुग्मप्रसादः स्यादनन्तरम् ॥ १८ ॥

इति ते पादुकाराज्यं रामस्य त्रिजगत्प्रभोः ।

वर्णितं यन्मया तुभ्यं श्रृणुयात्तत्प्रयत्नतः ॥ १९ ॥

स सर्वकामानाप्नोति भक्तिं चास्य सुदुर्लभाम् ।

अन्त्ये श्रीरामचरणं लभते नाऽत्र संशयः ॥ २० ॥

कामदा नृणां बुद्धिदा भूरिभुक्तिदा ।

मुक्तिदा सर्वकल्याणदायिनी रामपादुका ॥ २१ ॥

विरहोद्वेगनिर्मुक्तिर्भरतस्य यथाभवत् ।

तथा भक्तिमतां नृणां पादुकायाः प्रसादतः ॥ २२ ॥

व्याप्नोति नैव विरहो दुःसहोऽपि सीतापतेः ।

अमन्दानन्द-संदोह-सुधा-शीतलिते हृदि ॥ २३ ॥

करुणा रघुनाथस्य भक्तेषु परिवर्तिं या ।

सैव विश्वासभूरेका नृणां मोहतमोजुषाम् ॥ २४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्यकरुणाशाली प्रभुरेको रघूद्वहः ।
तवास्मीति ब्रुवन्मर्त्यो वशी कुर्यात्क्षणेन यम् ॥ २५ ॥
सकृदास्वादितं येन रामेति रसनामृतम् ।
तं न मायामयी घोरा भुजंगी दशति क्वचित् ॥ २६ ॥
वीक्षिता रघुनाथेन ये ये करुणया दृशा ।
ते कालपाशनिर्मुक्ताः शेरते सुखसद्मनि ॥ २७ ॥
रघुवीरात्परो लोके न कश्चित्पुरुषो भवेत् ।
मोचयेत्कामपाशाद् यो भावकान् सकृदात्मनः ॥ २८ ॥

इति श्रीमदादिरामायणे ब्रह्मभुशुण्डसंवादे दक्षिणखण्डे पादुकाराज्ये समापनं नामाष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥

★ ★ ★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.